अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की मासिक पत्रिका

वर्ष : ४६ अंक : २ माघ-फाल्गुन वि.सं.- २०७८ फरवरी २०२२ मूल्य-१८ रुपये पृष्ठ -३२ RNI 43602/77 ISSN No.2581-981X
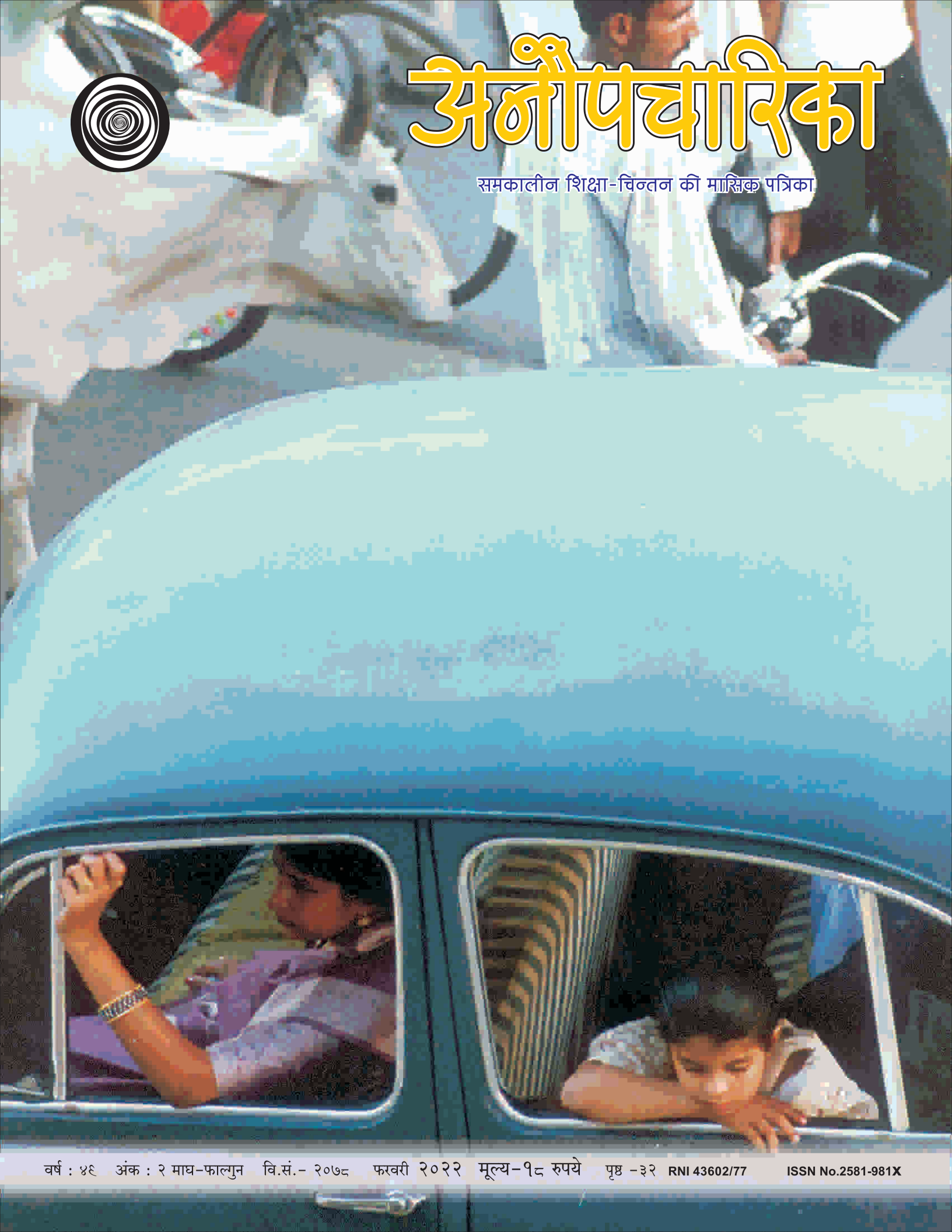
श्रद्धांजलि

आप सदा हमारी स्मृति में बसे रहेंगे । कोटि-कोटि नमन।
शिक्षा मनीषी, चिंतक, विचारक, राजस्थान प्रौढ़ शिक्षा समिति के अध्यक्ष एवं अनौपचारिका
के संस्थापक संपादक श्री रमेश थानवी हमें अलविदा कह गए । वे स्नेह और करुणा के मसीहा थे।
गांधीवादी एवं कर्मयोगी रमेश जी बिखरे समाज के ताने-बाने को प्रेम से सींचते आए थे। वे आगे भी रहेंगे हमारे साथ सदा।
अपनी स्नेहिल यादों और निश्चल मधुर मुस्कान के साथ। उनके ज्ञान, विवेक और सपनों की जोत सतत जलती रहे।
पाठकों से निवेदन है कि मार्च २०२२ का अंक श्री रमेश थानवी को समर्पित होगा।

इस अंक के अतिथि संपादक सुप्रसिद्ध फोटोग्राफर, कवि व चिंतक श्री हिमांशु व्यास हैं ।
हिमांशु जी ने हाल ही में समिति में सर्वथा अनूठी चित् छाया फोटोग्राफी कार्यशाला का संचालन किया था।
यह कार्यशाला थानवी जी के जीवन के एक सपने को फलीभूत करने जैसी ही थी। कलाओं के पारखी थानवी साहब इस कार्यशाला को लेकर
बड़े उत्साहित थे। उनकी बड़ी मंशा थी कि फरवरी का पूरा अंक चित् छाया की संकल्पना, इसके विद्यार्थियों के परिचय व उनकी तस्वीरों के साथ प्रकाशित हो।
उनकी इच्छा का मान रखते हुए हिमांशु जी ने इस अंक का आतिथ्य स्वीकार किया है। हमें आशा है पाठक इस अंक में हिमांशु व्यास जी को
पढ़ और छवियों के सृजन की प्रक्रियाओं को देख-समझ आनंदित एवं समृद्ध होंगे। ❑

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर,
बैठ शिला की शीतल छांह
एक पुरुष, भीगे नयनों से,
देख रहा था प्रलय प्रवाह ।

–कामायनी

श्री जयशंकर प्रसाद

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। ऋग्वेद

अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की पत्रिका

वर्ष : ४६ अंक : २ माघ-फाल्गुन वि.सं. २०७८ फरवरी, २०२२

क्र म

आवरण छायाचित्र
हिमांशु व्यास

अपील

समिति के सभी सदस्यों, दूर-दराज के मित्रों एवं भारत के विभिन्न राज्यों में फैले सुधी पाठकों से निवेदन है कि समिति के प्रकाशन की निरंतरता बनाये रखने के लिए अपनी सहयोग राशि पूरी उदारता के साथ भिजवाने का अनुग्रह करें। आज किसी भी पत्रिका का प्रकाशन बहुत मुश्किल काम है मगर समिति अपने पूर्ण सेवा भाव के साथ अनौपचारिका को पिछले ४६ वर्षों से निरंतर निकाल रही है। सभी प्रबुद्ध पाठक जानते हैं कि अभी हाल ही में कादम्बिनी भी बंद हो गई है जो हिन्दुस्तान टाइम्स का प्रकाशन था। ऐसी स्थिति में हम कटिबद्ध हैं कि अनौपचारिका निरंतर निकलती रहे। आपका सहयोग सादर अपेक्षित है।

BANK OF BARODA
Rajasthan Adult Education Association
Branch Name : IDS Ext.Jhalana Jaipur

I.F.S.C.Code : BARB0EXTNEH
(fifth Character is zero)
Micr Code : 302012030
Acct,No. 9815010002077

संस्थापक संपादक एवं संरक्षक :
रमेश थानवी
कार्यकारी संपादक :
प्रेम गुप्ता
प्रबंध संपादक :
दिलीप शर्मा

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
७-ए, झालाना डूंगरी संस्थान क्षेत्र,
जयपुर-३०२००४
फोन : 2700559, 2706709, 2707677
ई-मेल : raeajaipur@gmail.com

सद्भावना सहयोग :
व्यक्तिगत ५००/- रुपये वार्षिक
संस्थागत १०००/- रुपये वार्षिक
मैत्री समुदाय ५०००/- रुपये

चित् छाया

बच्चा जन्मते ही देखता है। आँख खुलने से भी पहले देखता है। सृष्टि में जन्मते पहले बच्चे की कोमल पलकों से प्रकाश अंदर रिसता होगा।

सृष्टि का नया साल उस बच्चे के जन्म से ही शुरू हुआ।

वो ही धूप १ जनवरी २०२२ को भी राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति के वृत्ताकार चौक में भर रही थी। कंधे पर कैमरा टांगे, समिति – द्वार पर झरती केसरिया मधुमालती को देखते चित् छाया फोटोग्राफी कार्यशाला के विद्यार्थी चौक में इकट्ठे हो रहे थे। कई बरसों से रमेश थानवी जी एक दर्शन के आधार वाली उत्सवनुमा फोटोग्राफी कार्यशाला संचालित करने का कह रहे थे। पर अपने ही गुरु तुल्य शख्सियत के सामने शिक्षक बन कर खड़े होना मेरे लिए उन का विद्यार्थी बने रहने की मधुरता खोने जैसा था। मुझसे ये उत्सव टलता रहा । अंततः मेरे हिंदुस्तान टाइम्स छोड़ते ही, सितम्बर २०२१ में वे बांह थाम कर समिति के ऑडिटोरियम से ऊपर जाते एक धूप से आलोकित कमरे में ले गए और कहा, ''यह तुम्हारा स्टूडियो है–उत्सव स्टूडियो... यहां चिंतन और सृजन करो।''

चित् छाया को शुरू से ही कैमरे के पीछे आ कर 'आँख' और 'देखने' का उत्सव बनाने का मन में था। कि फोटोग्राफी शब्द सुनते ही कैमरा हमें न सूझे। संसार से मिलने जा रहा हूँ – यह भाव उमड़े। उस मिलन के पल में मेरे मन में क्या भाव हों ! मेरी दृष्टि कैसी हो। और संसार के सागर से मैं यदि एक फोटो लेता हूँ तो वापस उसे क्या लौटाता हूँ। ये विचार मुझे विस्मित करता रहे–फोटोग्राफी वही है।

कलाएं कलाकृतियां नहीं, संस्कृतियां रचती हैं। क्यों कि कलाओं का उद्गम अज्ञात है। पहला नृत्य किस ने किया? पहला सुर किस कंठ में सजा? जापान के हाइकु कवि बाशो १६६४ की गर्मियों में पदयात्रा पर थे। एक गाँव से गुज़रते हुवे उन्हें कुछ सुर सुनाई दिए। अपने झोले से कागज़ निकाल उन्होंने तुरंत एक हाइकु लिखा –
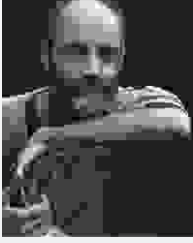
कवि व फोटोग्राफर हिमांशु व्यास हरिदेव जोशी पत्रकारिता विश्वविद्यालय में फोटोजर्नलिस्म विषय में ऍडजन्क्ट प्रॉफ़ेसर हैं व ब्रिटेन से प्रकाशित MONK पत्रिका में लेखक हैं । आप २१ बरस हिन्दुस्तान टाइम्स में चीफ़ फ़ोटोग्राफ़र रहे व स्तंभ लेखन भी किया। गांधी और कला विषय पर आप की बनाई लघु दार्शनिक फिल्म 'कलमख़ुश' पुरस्कृत हो चुकी है। 'अनौपचारिका' में १९९८ से योगदान करते रहे हैं और आपके द्वारा रमेश थानवी जी की कविताओं का किया अंग्रेज़ी अनुवाद Transfire पत्रिका में प्रकाशित हुआ है । आप हाइकु सोसाइटी ऑफ़ अमेरिका के सदस्य हैं तथा ऑस्ट्रेलिया में ओज़ एशिया उत्सव में दो बार आप को प्रदर्शनी व व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया। अनेक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित, समिति के सरोकारों से प्रगाढ़ एकात्मकता के चलते आप प्रतिभाशाली युवाओं के साथ सहर्ष समिति कार्यों में सेवाएं दे रहे हैं।❑

कलाएं शुरू होतीं
धान बोते हुए _ एक गीत
अंतरतम गाँव में

फोटोग्राफी को भी संस्कृति रचने के लिए अपने उद्‌गम को अज्ञात में खोजना है । फोटोग्राफी का गीत क्या हो? वो गीत आँख का हो। देखने का हो। मधुर हो। आँख सुख और दुःख में तो भीगती ही है, आनंद – अश्रु भी होते हैं। जय शंकर प्रसाद जी की कामायनी का प्रथम छंद सब विद्यार्थियों ने फोटोग्राफी के प्रार्थना गीत जैसे गाया। सृष्टि का पहला मनुष्य हिमालय के शिखर पर, 'भीगे नयनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह।'

फोटोग्राफी कला तो एकदम नवजात है पर इस का आधार – दृष्टि, सबसे प्राचीन है। और दृष्टि सदा ही इस देश के पास रही है। योग में दृष्टि से उत्पन्न समाधि का वर्णन है – दृश्यानुविद्ध समाधि। दृश्य, पदार्थ जगत से बनता है। दृश्य, भाषा से पहले की भाषा है। न्यूरोसाइंस का एक नवीनतम प्रयोग कहता है कि पदार्थों के नए नए संयोजन (फोटोग्राफी में जिसे कम्पोजिशन कहते हैं) देखने से, जैसा कि अपेक्षित था, संचार का क्षेत्र नहीं, बल्कि दिमाग का ब्रोकाज क्षेत्र क्रियाशील होता है जो नयी भाषाएं बनाने से सम्बंधित है। तो प्रशांत चित्त से फोटो लेना हर बार अपनी भाषा गढ़ने का काम है। हर एक के पास भाषा हो, शिक्षा और क्या होती है !

चित् छाया पर बात करते हुए थानवी जी ने फोटोग्राफी की संकल्पना एक वाक्य में कही, ''... कैमरे द्वारा सृजनात्मक सम्प्रेषण के लिए कुदरत की सुंदरता और सामजिक जीवन की करुणा देखना और आत्मसात करना।''

इस उत्सव में सर्वथा नए कला – प्रयोगों के सुझाव और क्रियान्वयन हेतु नाट्य निर्देशिका मूमल तंवर और तकनीकी पक्ष संभालने हेतु युवा कलाकार अंशुल बंधिवाल का बहुत आभार।

समिति परिवार इस अंक को मूर्त रूप देने में मेरे संग जिस मनोयोग से जुटा रहा वो अविस्मरणीय है। दिनेश जी, प्रेम जी, मनीष जी, दिलीप जी और गिरीश जी का बहुत आभार।

रमेश थानवी जी के कार्य हम सब उन्ही के जैसे करते रहें।

इन्हीं स्वप्नों में जागृत ... ❑ **हिमांशु व्यास**

छवि का व्याकरण

❑

रमेश थानवी

❑
रमेश थानवी

यह लेख अनमोल है। ये शब्द लिखे नहीं, कहे गए हैं। और जिस समय ये कहे जा रहे थे, हमें दिख रहा था कि कहने वाला इन शब्दों को देख रहा है। थानवी जी दृष्टा ही थे। सुनते-सुनते बीस विद्यार्थियों की आंखें स्थिर हो चुकी थी और चित् फोटोग्राफी के दर्शन के किनारे आ खड़ा हुआ था। सूत्र जैसे वाक्य। १ जनवरी, २०२२ की दुपहर, 'चित् छाया' कार्यशाला के प्रारंभ में दिया गया यह उद्‌बोधन कैमरा थामने से पहले दी गयी दीक्षा है। फोटोग्राफ के लिए वे 'छवि' जैसा अर्थों से छलकता शब्द काम में लेते हैं। उसे आंख से देखी गयी भाषा कहते हैं। और उस भाषा की ताकत से हमें मिलाते हैं। यह आलेख, उस दीक्षा-मंत्र की रिकॉर्डिंग से सुश्री मूमल तंवर ने लिपिबद्ध किया है। शिक्षा के ऋषि का, किसी 'कक्षा' में दिया गया शायद यह अंतिम व्याख्यान था।❑सं.

आज एक सपना सच हो रहा है... कि हम बहुत सारी आंखों से देखना सीखेंगे।

आज हम चित् छाया के उत्सव में बैठे हैं तो हम दृष्टि विस्तार से चेतो विस्तार की ओर बढ़ रहे हैं। चेतो विस्तार एक बहुत अच्छा शब्द है। यहां होना है।

एक बड़ा पुराना प्रसिद्ध वाक्य है कि मैं पुत्र हूं और यह पृथ्वी मेरी मां है। यह पृथ्वी सारी हमारे देखने के लिए बहुत कुछ रचती है और सब कुछ यहीं घटता है और उसे हम अलग-अलग नजरिए से देखते हैं।

यह देखने में रूप होता है। देखने का संसार मूर्त संसार है। सामने एक जीता जागता व्यक्ति खड़ा होता है। सांस लेता हुआ पेड़ खड़ा होता है। कुछ घट रहा है। खुद रोशनी घट रही होती है। कुछ अंधेरा होता है। तो यह सारी लीला जो है रोशनी और अंधेरे की, दु:ख और सुख की, करुणा की, यह जीवन को प्राण देते हुए पेड़ों की, कुदरत की, ऋत् की, यह सब कुछ हमको देखना है। और यह जो कुछ हम देखते हैं इन छवियों में, इन छवियों में एक ताकत है।

एक छवि है जो कुछ बोलती है। कुछ कहती है। और उस छवि के बाद दूसरी छवि तुरन्त सामने आकर प्रकट होती है। सत्यजीत रे कहते हैं- रुक जाओ। ऋत्विक घटक कहते हैं- ठहरो। वो जो दूसरी छवि सामने आती है वह एक नया व्याकरण रचती है... तो इन छवियों का अपना एक व्याकरण है। सामने कौन सी छवि आई उस पर हमारी नजर जाए और हम उस व्याकरण को समझ पाएं कि उसने क्या कहा...

क्यूंकि छवि बोलती है। एक
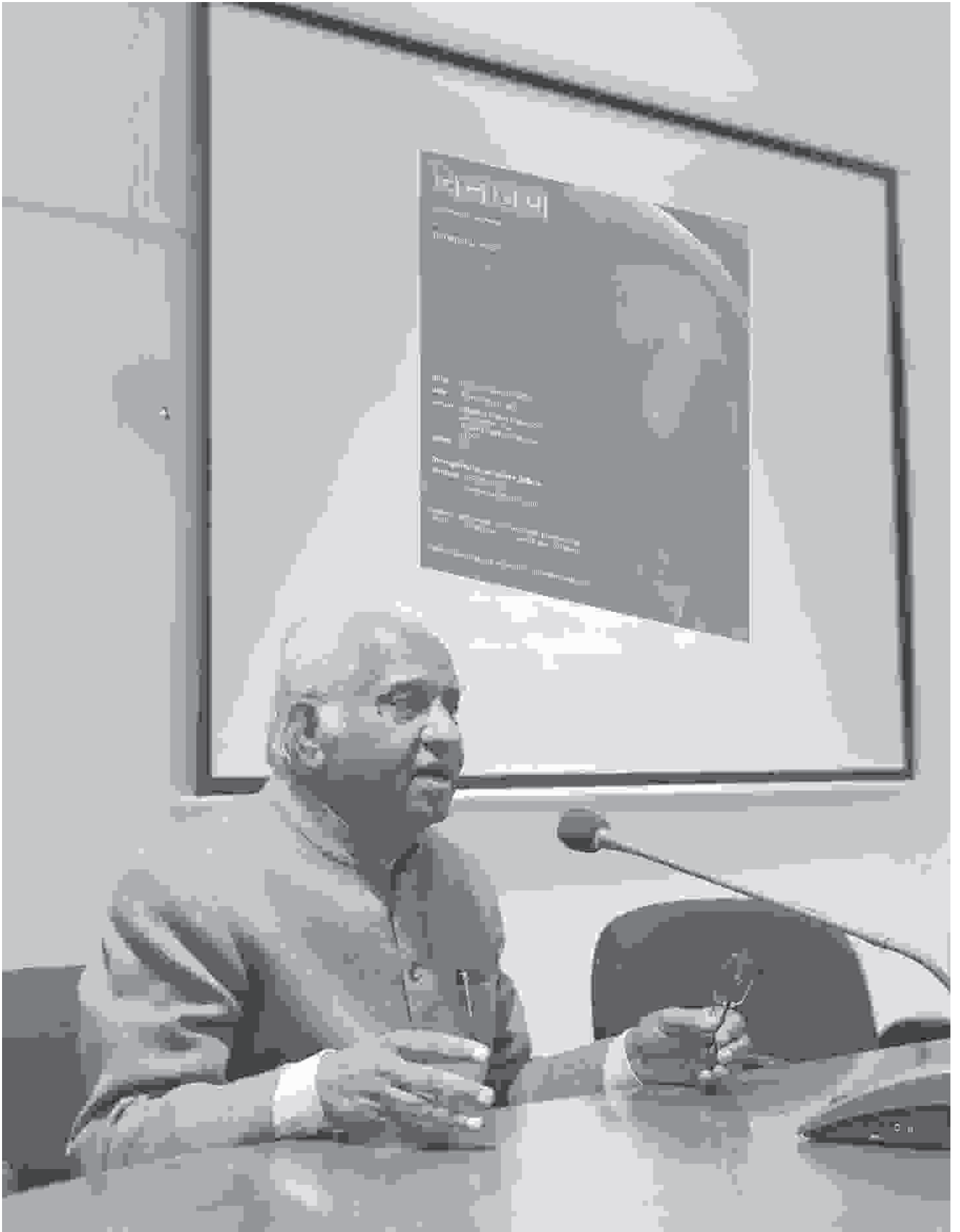
रोचक बात यह है छवियों में... छवियों ने आकारों को ग्रास्प कर लिया है... पकड़ लिया है...

आवाज नहीं है तो स्वर नहीं है। व्यञ्जन नहीं है, लेकिन फिर भी एक भाषा है... वो भाषा कौनसी है... और वो भाषा आंख से देखी गयी है... आंख ने उसे पहचाना है और फिर उसे कैद किया है... सामने रख दिया है। संभाल कर के।

तो एक और काम हुआ है। यह जो छायांकन का संसार है यह कल का संसार भी है, आज का संसार नहीं है केवल। यह केवल वर्तमान नहीं है। यह भविष्य भी है।

इस कालातीत जगत में प्रवेश करना हमारा अपने आप में एक घटना भी है। हम कल के लिए कुछ रच के रख देते हैं तो इस भाषा में बड़ी ताकत है।

लकीर खींचना बहुत मुश्किल है और शायद जरूरत भी नहीं है। यह आकाश से स्वागत हुआ और आकाश की ओर देखने के लिए कहा गया कि ऊपर देखो तो ऊपर गोल आकाश था। वो आकाश जितना हम कैप्चर कर पा रहे थे वह भी गोल था और अपर्णा ने ठीक कहा वो भी शून्य आकार था। लेकिन वो आकाश हमारे भीतर भी है। जिसे देखने के लिए कहा गया तो मुझे लगा कि वह अपने भीतर उतर रहा है। तो उसे उतारने के लिए भी कहा गया कि भीतर के आकाश को भी हम देख सकें। कोई प्राणी ऐसा नहीं है जिसके अंतर में आकाश ना हो। फिर देखिए कि शुरुआत हुई नामों की व्याख्या से तो मैंने कल भी हिमांशु से कहा था कि नाम और रूप दर्शन में एक साथ प्रयोग किया जाता है, नामरूप। तो नाम, रूप का है दरअसल । और रूप को देखना फोटोग्राफी का काम है और रूप को समझना, रूप के भीतर जो आकाश है उस आकाश से जोड़कर व्याख्यायित करना और आरोपित करना ये दो बड़े काम है। तो यह नाम जो हैं, कल हमने अलग-अलग नामों के अर्थ खोजे, मैंने भी मेरे नाम का अर्थ बताया, सब ने बताया... लेकिन वो अर्थ तो उस रूप का है। रूप का कंटेंट क्या है ? देखिए, मैं कह रहा हूं ना कि दर्शन की कक्षा थी और फिर आकाश, शून्य, फिर नाम, रूप... रूप के भीतर क्या है? 'दर्शन' में, कक्षा में दो शब्दों का इस्तेमाल अलग से किया जाता है... फॉर्म और कंटेंट। फॉर्म तो रूप है, कंटेंट क्या है ? कंटेंट को परिभाषित करने जाएं तो कुछ और दिखाई देता है और वह यहां के शब्दों में, ब्रेस्सां के शब्दों में दिखा और हिमांशु और व्याख्यायित करते रहे। हमको दरअसल फोटोग्राफी करते हुए यह ... कि किस तरफ जाना है... कल की शुरुआत दर्शन के साथ होगी।

वो जो सुपर स्नेप कहते हैं या कुछ कहते हैं खींचते जाओ, कुछ भी खींचते जाओ और एल्बम भरते जाओ और फिर उन एल्बम को संभाल के रखो और उन्हें फिर कभी मत देखो तो यह जीवन का प्रयोजन हो नहीं सकता। फोटोग्राफी जीवन का प्रयोजन है और शायद जीवन को देखने के नजरिए को परिमार्जित करने का एक मीडियम है।

जैसे मैंने कहा था कि इसमें भाषा नहीं है पर व्याकरण है। अब मैं आज दूसरी बात कहता हूं कि इसमें भाषा नहीं है फिर भी व्याकरण है और जो व्याकरण है वो भावों की व्याकरण है, इस भाव को आप कैप्चर करते हो, इस मूवमेंट को कैप्चर करते हो, इस एंगल से। कल आपने ऊपर देखा जब उस आकाश में डेप्थ को भी दिखाता है। दर्शाता है।

उसी पर निर्भर करता है कि वह कितना क्रिएटिव फोटोग्राफ है। तो कल की कक्षा जो है यह बहुत ही समग्रता के दर्शन के साथ शुरू हुई है, हम लोगों में से आगे देखना है। यह दिखाई तब देगा जब हिमांशु दिखायेंगे ब्रेस्सां के, रघुवीर सिंह के, रघु रॉय के, बड़े-बड़े लोगों के फोटोग्राफ दिखायेंगे, तब हम जान पायेंगे कि देखिए यह क्या कमाल किया है। रोशनी भी उसमें है जो आकाश में दिखी न वो रोशनी भी उसमें है... । वो जो आकाश भी है तो लाइट, शेड की रचना भी। वहां पर फोटोग्राफ को जीवन देती है...। मुझे तो लग रहा है कि यह शुरुआत बहुत ही अच्छी हो गई कल... और आगे तो आप लोग, हम सब लोग हैं।

यह ध्यान रखने की बात है, याद रखने की कि नाम रूप जो है वह अपने आप में एक दर्शन है... अपने रूप को पहचानना, बाहर के रूपाकारों को देखना और फिर उन रूपाकारों को इंटर्नलाइज करना यह एक बड़ा काम है।❑

मन की आंख

❑

हेनरी कार्तिए-ब्रेस्सां
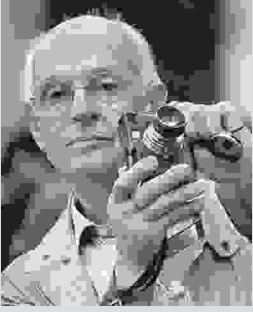
हेनरी कार्तिए- ब्रेस्सां मानवीय गुणों एवं करुणा से सींचित महानतम फोटोग्राफरों में से एक हैं। वे संगीत और चित्रकला के विद्यार्थी भी थे और फोटोग्राफी विधा को उन के चित्रों और अनेक लेखों ने एक स्वतंत्र दर्शन की तरह स्थापित कर दिया है। प्रस्तुत लेख ब्रेस्सां के 'द माइंड्स आई' १९७६ लेख का अनुवाद है। ❑ सं

फोटोग्राफी अपने उद्गम के समय से बदली नहीं है, सिवाय अपने तकनीकी पहलुओं के जो कि मेरे लिए खास चिन्ता की बात नहीं है। फोटोग्राफी देखने में एक सरल गतिविधि लगती है। दरअसल यह एक अनेक-मार्गी और अस्पष्ट प्रक्रिया है जिसमें इसका अभ्यास करने वालों में एकमात्र मिलती-जुलती बात है- उपकरण। इस रिकॉर्डिंग यंत्र से जो प्रकट होता है वह बच नहीं पाता अपशिष्ट उत्पादक विश्व की आर्थिक बाध्यताओं से, तनाव जो तीखे होते जाते हैं और उन्मादी पर्यावरणीय परिणामों से।

निर्मित या निर्देशित फोटोग्राफी में मेरी रुचि नहीं है और यदि मैं कोई धारणा बनाता हूं तो वह केवल मनोवैज्ञानिक या सामाजिक/समाजशास्त्रीय स्तर पर होगी। एक तो वे हैं जो पहले से व्यवस्था कर के फोटोग्राफ लेते हैं और एक वे हैं जो छवि खोजने निकलते हैं और उसे पकड़ते हैं। मेरे लिये कैमरा एक स्केच-बुक है, एक उपकरण सहज-बोध व सहज-प्रतिक्रिया का झपकते पल का स्वामी जो, दृश्यात्मक अर्थों में साथ-साथ सवाल करता है और निर्णय लेता है। संसार को अर्थ देने के लिए व्यक्ति जो कुछ व्यूफ़ाइण्डर से फ्रेम करता है उसमें डूबा हुआ स्वयं को महसूस करे। इस प्रवृत्ति के लिए चाहिए एकाग्रता, मन का अनुशासन, संवेदनशीलता और एक चेतना ज्योमेट्री की । साधनों की एक महान न्यूनता से कोई अभिव्यक्ति की सरलता पर पहुंचता है। अपने विषय और स्वयं के प्रति एक भव्य सम्मान के साथ ही किसी को फोटोग्राफ लेने चाहिए।

फ़ोटोग्राफ लेने का अर्थ है सांस थाम लेना। जब पल-पल उड़ती गायब होती वास्तविकता के सम्मुख हमारी सब आंतरिक क्षमताएं एकत्रित हो रही होती हैं। यही वह क्षण होता है जब एक छवि को साधना एक महान भौतिक और बौद्धिक आनन्द बन जाता है। फोटोग्राफ लेने का अर्थ है- पहचानना-तत्क्षण और क्षण के भी एक भाग में-दोनों चीजें-तथ्य स्वयं और एक ठोस संयोजन आंखों से अनुभूत आकारों का-जो उसे अर्थ देते हैं। यह है अपने दिमाग, अपनी आंख और अपने हृदय को एक ही धुरी पर धर देना।

जहां तक मेरा प्रश्न है, फोटोग्राफ लेना एक माध्यम है समझने का जो चाक्षुष अन्य अभिव्यक्तियों से अलग नहीं किया जा सकता। यह एक तरीका है चिल्लाने का, स्वयं को मुक्त करने का, न कि अपनी मौलिकता का दावा और उसे साबित करने का। यह जीवन का एक रास्ता है। अराजकता एक निमित है। बुद्धवाद न तो धर्म है, न दर्शन, अपितु एक माध्यम है जो निहित है जीवात्मा को नियंत्रित करके समन्वय प्राप्त करने में और करुणा द्वारा उसे औरों को अर्पित करने में।❑ अनुवाद:हिमांशु व्यास

सां-लज़ारे स्टेशन के पीछे, पेरिस-१९३२
फोटो : हेनरी कार्तिए-ब्रेस्सां

प्रशान्ति

❑

विलियम वर्ड्सवर्थ

सशक्त अनुभूतियों का
तत्क्षण छलछलाना कविता है
यह उद्गम पाती है प्रशांति में याद आते मनोभावों में
यह मनोभाव मनन में एक गति द्वारा
प्रशान्ति को धीमे से विलीन कर देता है
और एक मनोभाव जो मनन से पहले था
उभरने लगता है
शनै: शनै: शने:... शनै:

कवि शब्द के मायने क्या हैं?
कवि होता क्या है?
वह स्वयं को किसे संबोधित
करता है?
उससे किस भाषा की प्रतीक्षा की जाए?

वो है
एक मनुष्य कुछ कहता मनुष्यों से
मनुष्य, सच में जिसे अधिक जीवन्त संवेदनशीलता
अधिक उमंग और कोमलता
प्रदत्त है
मानव स्वभाव की जिसे अधिक समझ है
और एक अधिक समग्र आत्मा अन्य मनुष्यों से
एक मनुष्य अपने ही भावावेशों
और निर्णयों पर मुग्ध और जो अन्य मनुष्यों से अधिक आनन्दित होता है
अपनी जिजीविषा पर, प्रफुल्लित होता है जो मनन कर
वैसे ही भावावेश और निर्णय देख सृष्टि में
और आदतन उन्हें सृजित करता न मिलने पर अभ्यास से
जिसने पायी है तत्परता व शक्ति अभिव्यक्त करने में
जो वह सोचता और महसूस करता है
विशेषत: वे विचार और भावनाएं जो उसके स्वयं के चुनाव से
उसके स्वयं के मन की बनावट से
उठती हैं उसमें
बिना किसी बाहरी उद्दीपन के।

विलियम वर्ड्सवर्थ के एतिहासिक दस्तावेज **प्रिफेस टू द लिरिकल बैलेड्स** में से चुने गए कुछ अंशों का काव्यात्मक अनुवाद।

यह विद्यार्थियों द्वारा फोटो के सृजन की अनुभूति व प्रक्रिया पर मनन के लिए आन्तरिक भूमिका रचता रहा। सं.

मूमल तँवर

रवि कांत
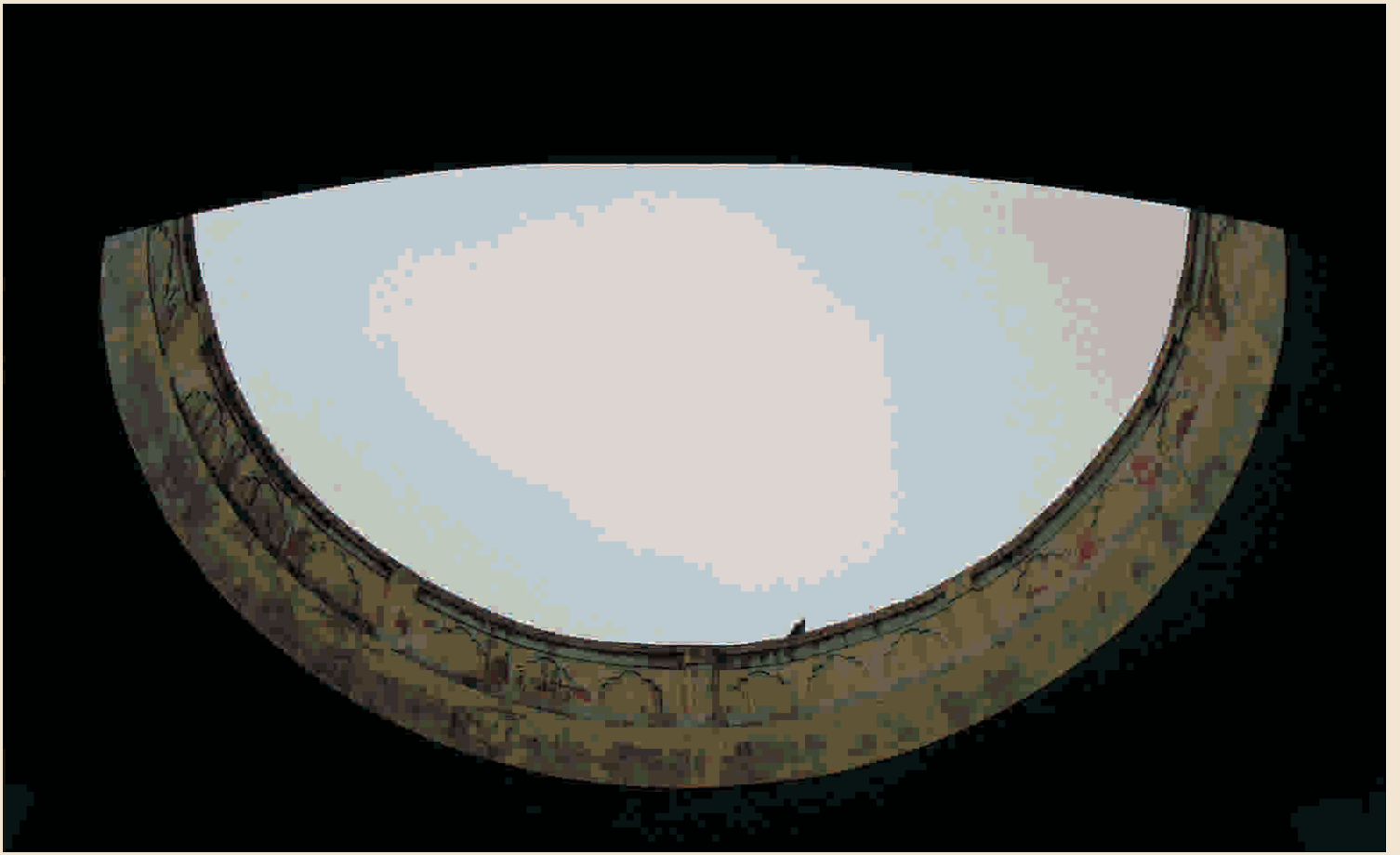
प्रेम गुप्ता

प्रमोद पाठक
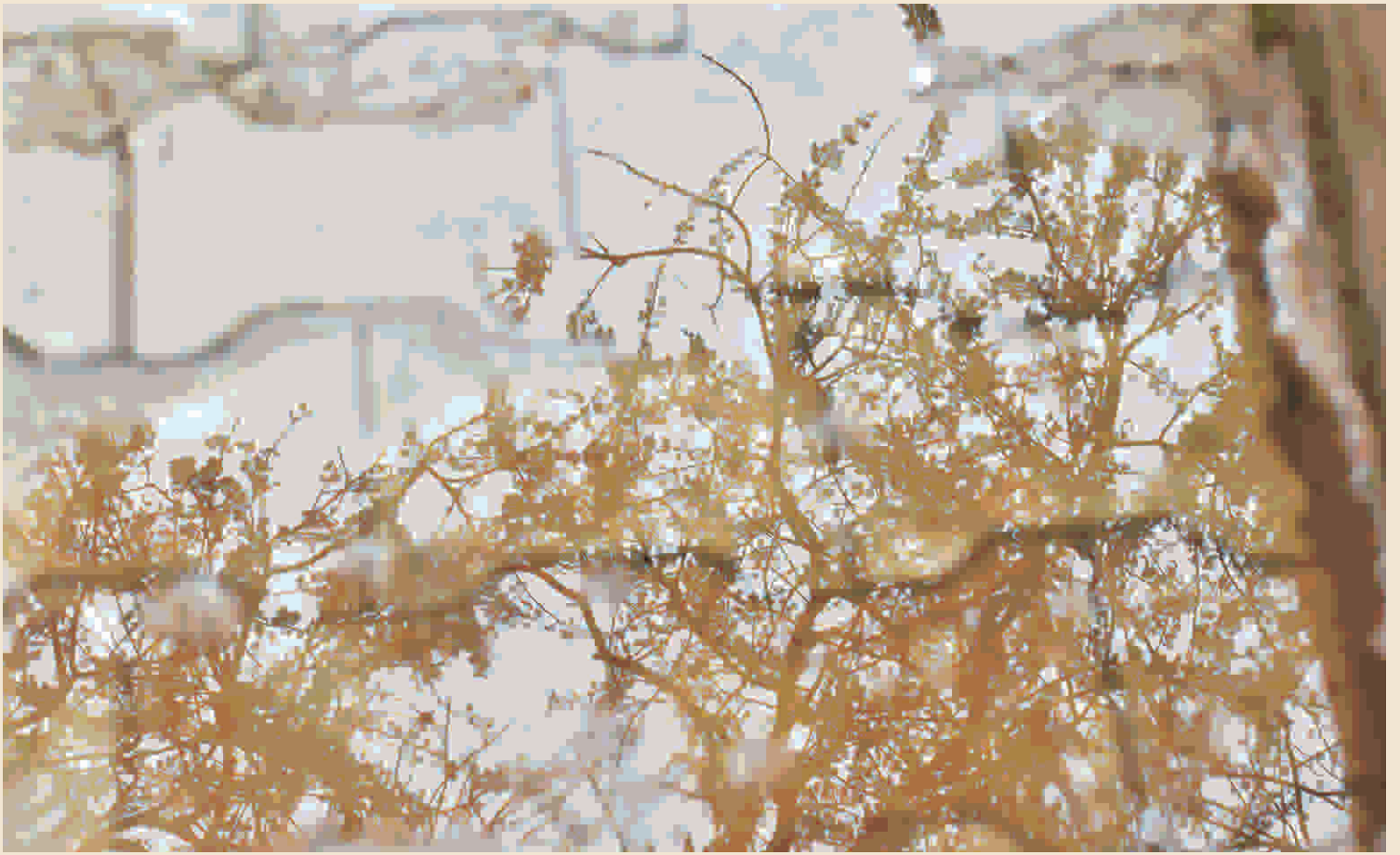
विपिन जांगिड़
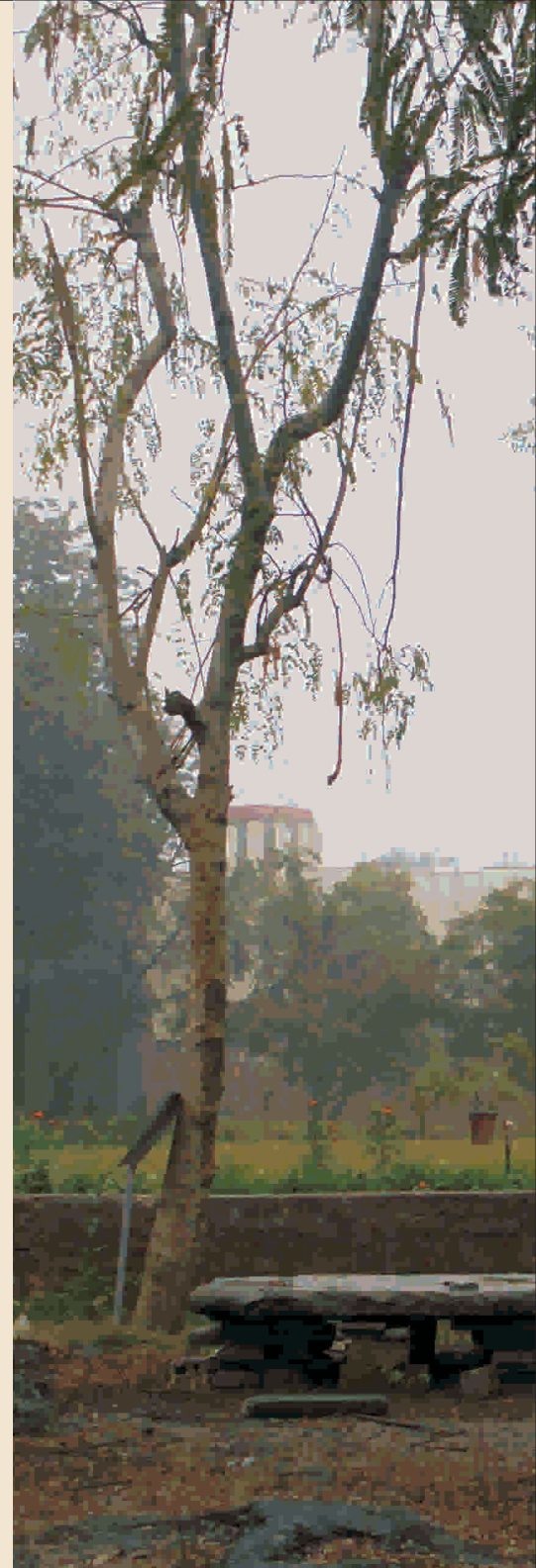
यामिनी सेन

दर्श

चित् छाया के विद्यार्थियों द्वारा राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण

कार्यशाला के दर्शन के अनुसार कैमेरा का छोटा-बड़ा होना या मोबाईल से या दूर कहीं

अपने आस-पास को ही चेतना के आलोक में सब ने देखा। शिशिर की छितरायी बारिश की ब

भूमि पर भीगे पदचाप देखे। आकाश को आंख जैसा देखा। को

कोई मौन... अपने कदमों को किसी

कबीर सिसोदिया

र्नी

समिति के प्रशान्त परिसर में लिए हुए २० फोटोग्राफ्स।
ों दर्शनीय स्थान पर फोटो वॉक कर फोटो लेना महत्वपूर्ण नहीं था। देखना महत्वपूर्ण था।
ूंद देखी। जाड़े में एकाकी पत्थर की बैंच देखी। एक मनुष्य की ओर झुकता दूसरा मनुष्य देखा।
ई मिनटों तक उकड़ू बैठा व्यूफाईण्डर से पत्ते को देख रहा था।
अज्ञात छवि की ओर बढ़ने दे रहा था।

बोधायन शर्मा

त्वरिता सिंह चौहान

उर्वशी देव रावल

विनिता सोनी

बटीना मलिक

अंशुल बंधिवाल

रूपांक्षा चारण

अपर्णा देवल

नीलम अग्रवाल

अभिषेक जोशी

अपर्णा मक्कड़

चरखा और कैमरा

❑

हिमांशु व्यास

मार्गरेट बर्क-व्हाइट

साभार : लाइफ

१९४६ का बसंत है। न्यूयॉर्क में स्थित 'लाइफ' पत्रिका के ऑफिस में एक पार्सल आया है। पार्सल भारत से आया है। भेजने वाले का नाम है मार्गरेट बर्क-व्हाइट, लाइफ की फोटोजर्नलिस्ट और उसमें हैं उन के द्वारा ली गयीं फोटोग्राफ्स की नेगेटिव फिल्में। उन में से एक नेगेटिव में वो तस्वीर है जिसे हम सब बचपन से देखते आये हैं। सफ़ेद बिछावन पर अपने शरीर के आकार में ही सिमटी हुई पालथी में उज्ज्वल धोती पहने बापू और चलते-चलते अभी-अभी रुका हुआ सा उनका चरखा।

बर्क-व्हाइट, १९४७ में होने वाली भारत की आज़ादी से पहले 'इंडियाज लीडर्स' फीचर के लिए बापू के फोटोग्राफ्स करने आयी हुई हैं। बापू अपना दैनिक कामकाज करते, अखबार पढ़ते, सूत कातते, चिट्ठियां पढ़ते बर्क-व्हाइट से बातें करते सहर्ष फोटो खिंचवा रहे हैं। पर उनमें से जो तस्वीर सबसे प्रसिद्ध हुई उस तस्वीर के घटित होते समय बापू और बर्क-व्हाइट में जो संवाद हुआ वो न केवल बापू के चाहने वालों के लिए अपितु प्रत्येक कलाकार, विशेषतया फोटोग्राफर के लिए जानना आवश्यक है।

उस पार्सल में नेगेटिव के साथ बर्क-व्हाइट का हाथ से लिखा एक पुर्जा भी है। वे लिखती हैं, ''(गांधी) सुबह ४ बजे शुरू कर के प्रतिदिन १ घंटा सूत कातते हैं। आश्रम के हर सदस्य को सूत कातना होता है। वे स्वयं और उनके अनुयायी सब को सूत कातने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।'' बर्क-व्हाइट स्वयं के लिए आगे लिखती हैं, ''यहां तक कि एम.बी.डब्ल्यू. को भी अपना कैमरा पास ही रख के सूत कातने के लिए प्रोत्साहित किया गया। जब मैंने कहा कि फोटोग्राफी और कताई दोनों ही हस्तकलाएँ हैं... तो मुझे संजीदगी से कहा गया, ''दोनों में से महत्तर कताई है।''

२०१४ में गांधी जी के १४५ वें जन्मदिवस पर लाइफ मैगज़ीन ने इस ऐतिहासिक तस्वीर के पीछे की विस्मृत कहानी सब पाठकों से साझा की। हालांकि ये फोटोग्राफ १९४६ के अंक के बजाय, बापू की हत्या के पश्चात लाइफ ने फरवरी १९४८ के अंक में आधे पन्ने पर छापा था। लेख का शीर्षक था, 'इंडिया लूज़ेज़ हर ग्रेट सोल'

बर्क-व्हाइट ने बापू के ही जैसे बैठ कर बापू के कहे अनुसार सूत काता। उस पुर्जे की अंतिम पंक्ति में वे कहती हैं, ''कताई को यहां एक उच्च काव्य की तरह संबोधित किया जाता है।''❑

पदयात्रा

❑

मूमल तंवर

मूमल तंवर

चित् छाया कार्यशाला दर्शन, कला और तकनीक का संगम तो थी ही, यह शिक्षण के स्वतःस्फूर्त नवाचारों की भी एक घटना थी। इसका विद्यार्थी बन इस में एकाग्रता से भाग लेते हुए भी सारे सत्रों को शब्दशः लिखते जाना, वीडियो बनाना, ऑडियो रिकॉर्ड करने का बहुआयामी दस्तावेजीकरण मूमल तंवर ने किया । वे नाट्य निर्देशिका हैं और ड्रामा पढ़ाती भी हैं। कला शिक्षण के समसामयिक अकादमिक स्वरूप पहचानने में उनकी गहरी रुचि और रमेश थानवी जी की प्रेरणा का परिणाम है उन के द्वारा तैयार ये विस्तृत रपट । ❑ सं.

१ जनवरी, २०२२ से ७ जनवरी, २०२२ तक चला चित् छाया उत्सव, देखना सीखने का उत्सव था... देखने को विचारने का उत्सव था, देखे हुए को कैमरा से बुनना सीखने का उत्सव था। इसके प्रशिक्षक हिमांशु व्यास रहे। जिनकी कही पंक्तियों ने नए साल में सीखने की शुरुआत की। उन्होंने कहा, 'मैं वो सिखाने की चेष्टा कर रहा हूं जो मुझे किसी ने नहीं सिखाया'।

सात दिवसीय फोटोग्राफी कार्यशाला में वे जैसे हमें एक पदयात्रा पर ले गए हों और फोटो खींचने से पहले, खुद को जानना, खुद को सुनना, खुद की सुनकर कहीं रुकना व अपने आस-पास के संसार में ही कितना कुछ घट रहा है यह देखने वाली आंखों से संवाद किया।

बिना कैमरे के जो छवियां हमारे चित् पर बनती है उन्हें जानने के लिए धैर्य से खुद की आंखों को भीतर की ओर मोड़ना होगा और फिर कैमरे के तकनीकी पक्ष को समझ उन छवियों को ढूंढ उस क्षण को कैमरे से बांधना इस उत्सव में हमें सिखाया गया।

पहला दिन – 'नाम-रूप'

पहले दिन सभी को एक भरा हुआ झोला मिला... जिसमें थे एक कैम्लिन स्याही की दवात, सादा सा दिखता फाउण्टेन पेन, विश्व की प्रसिद्ध तस्वीरों के साथ छपी चित् छाया उत्सव की चिट्ठी, आनन्द.के. कुमारास्वामी की किताब 'इंट्रोडक्शन टू इंडियन आर्ट' से परिचय के दो पन्ने।

कार्यशाला की शुरुआत समिति के गांधी चौक में गोल आसमान को देखते हुए जयशंकर प्रसाद जी की कामायनी की चार पंक्तियां गाते हुए हुई। श्री रमेश थानवी ने इस कार्यशाला को उत्सव कहा और हिमांशु व्यास बोले कि, 'हम आकाश की ओर देखते हुए उत्सव शुरू करते हैं'।

उत्सव शुरू करते हुए हिमांशु जी ने कहा कि यह कार्यशाला कैमरे के तकनीकी पक्ष के बारे में नहीं है बल्कि बिना कैमरे के फोटोवॉक पर जाने और देखने के बारे में है।

रसूल हमजातोव के गांव के परिचय की पंक्तियां 'त्सादा–सत्तर गर्म चूल्हे' कहते हुए हिमांशु जी ने सभी को कहा कि अपने नाम का अर्थ बताएं और नाम का क्या दृश्य दिखाई देता है वह भी बताएं।

सभी प्रतिभागियों ने काफी विचार व मंथन के बाद बताया कि किसी को अपने नाम का दृश्य खेजडी, रेगिस्तान, एक तारा आदि दिखाई देता है पर ये दृश्य किसी को भी तुरन्त नहीं आए। अपने नाम का रूप क्या है इस पर सभी सोचते रहे।

अगले सत्र में गांधी जी की एक फोटो दिखाई गई जो कि मार्ग्रेट बर्क–व्हाइट ने खींची थी जिसमें गांधी जी आलथी–पालथी बनाए बैठे हैं और उनके हाथ में एक खुली किताब है और दायीं ओर चरखा रखा है... इस तस्वीर से जुड़े संवाद को भी यहां साझा किया गया कि कैसे गांधी जी ने मार्ग्रेट बर्क–व्हाइट को उनका कैमरे को रख देने और सूत कातने को कहा। इस तस्वीर पर बात करते हुए हिमांशु जी ने बताया कि वह फोटोग्राफर सूत कात रही है और सूत कातने को **हाईएस्ट पोयट्री** कह रही है... कि फोटोग्राफर सिर्फ कैमरे तक सीमित नहीं है, कैमरे से कविता लिखी जा सकती है, उपन्यास लिखा जा सकता है पर यह सीखना होगा कि देखना क्या है?

इसके बाद विलियम वर्ड्सवर्थ की 'लिरिकल बैलेड्स' किताब की भूमिका से कुछ पंक्तियों पर चिंतन हुआ कि कविता क्या है, कैसे कविता प्रशान्ति पाते ही चली आती है।

हमने प्रशान्ति के उन क्षणों पर भी बात की जिन क्षणों को पाते ही कैसे शांत समुद्र में आई लहर की तरह बहुत सारे भाव उमड़–घुमड़ कर एक जगह आ जाते हैं।

प्रशान्ति शब्द क्या है ? प्रशान्ति के क्षण कौनसे हैं? प्रशान्ति सृजन से पहले का समय है।

हिमांशु जी ने कहा कि इस कार्यशाला में हम कविता, थियेटर, सिनेमा, संगीत सभी पर बात करेंगे पर हर समय हम बात फोटोग्राफी की ही कर रहे होंगे।

चाय ब्रेक पर जाने से पहले हिमांशु जी ने **हेनरी कार्तिए–ब्रेस्सां** का एक विचार सभी से साझा किया, कि फोटोग्राफी वह है जिसमें तत्क्षण यह पहचाना जाए कि मेरे सामने क्या हो रहा है।

कैमरा पकड़ने का सही तरीका–इसके बाद हम सभी को कैमरे को पकड़ने का सही तरीका बताया गया कि हम अपने पैर जमा कर,सिकुड़ कर, कैमरे को अपने शरीर के पास रखें और मजबूती से कैमरे को पकड़ें।

दूसरा दिन – 'उद्गम–स्मरण'

दूसरे दिन इस बात पर ध्यान दिया गया कि हम आज अक्षर इस पेन से आसानी से लिख रहे हैं तो हम इसके उद्गम से अब तक की यात्रा को नहीं भूले कि हम यहां तक कैसे पहुंचे हैं? आज जो सैकण्डों में हम फोन से खूब सारी तस्वीरें ले पाते हैं, यहां तक आने की कितनी मेहनत से भरी एक वैज्ञानिक यात्रा रही है।

उद्गम व यात्रा को समझाने के लिए हम पहले लिपि की यात्रा पर गए। कैसे ब्राह्मी लिपि से लेकर अब तक २५०० वर्ष में 'अ' में कितने परिवर्तन हुए।

३७ हजार साल पुराने गुफा के भित्ति चित्र, १७ हजार साल पुराना फ्रांस की गुफा का एक चित्र, पहला पिन होल कैमरा, कैमरा आब्स्क्यूरा का आना, १८२६ में आयी पहली स्थायी तस्वीर, १८३८ में पहली बार एक इंसान की तस्वीर निकल पाई, कई घंटों के इंतजार के बाद एक इंसान कैमरे में अंकित हो पाया। पहली बार पोर्ट्रेट का आना, एक यंत्र से बांध कर इंसान की पीठ को सीधा रखा जाता था और उसे एक ही तरह से बैठा रहना होता था। काफी जतन के बाद एक पोर्ट्रेट बनता था। उस व्यक्ति के मन के बारे में सोचो जिसे लगता होगा कि कैसे वह पहली बार खुद को कागज पर छपा हुआ देखने जा रहा है।

इस पूरी यात्रा को चित्रों की सहायता से समझाने के बाद हिमांशु जी ने कहा कि हम हमेशा कलाओं के उद्गम को याद रखें।

अंतिम सत्र में हम ने जर्मन संगीतकार बीथोफेन द्वारा रचित मूनलाइट सोनाटा के पहले मूवमेंट को सुना। बताया गया कि उन्होंने नाटक के लिए भी संगीत दिया, उनकी लिखावट संगीत जैसी थी। इसे सुनने के बाद नीरवता छा गई और बिना शब्दों के उसी भाव में दिन, शाम में घुल गया।

तीसरा दिन– 'देखना'

सत्र की शुरूआत नामरूप गतिविधि के विस्तार से हुई, सबने बताया कि मूनलाइट सोनाटा को सुनकर उन्हें क्या दृश्य दिखाई दिए, कैसी अनुभूति हुई।

मानसिक अवलोकन – सभी को चाय अंतराल में एक गतिविधि दी गई कि हम एक व्यक्ति को अपने मन में चुन लें और उसका अवलोकन कर खुद के नोट्स बनाएं जिससे कि हम परिवेश की समझ बना पाएं कि फोटोग्राफर जब भी कहीं फोटो खींचने जाए तो वह अपने अवलोकन से परिवेश को थोड़ा सा जान पाए।

कैमरा संरचना–कैमरे की संरचना को विस्तृत रूप से फिल्म कैमरा की सहायता से और आंख से समानता बताते हुए समझाया गया कि कैसे प्रकाश अंदर प्रवेश करता है और एक छवि बनती है।

अंतिम सत्र में हिमांशु जी ने कहा कि फोटोग्राफी के लिए देखना साधना होता है, अपने मन से दृष्टि को आकार देना होता है।

सुई धागा सत्र – कार्यशाला में सभी प्रतिभागयों को जो झोले दिये गए वह एक मोटे कैनवस के कपड़े से सिलवाये गये जिसमें दो जेबें दी गई और तभी विचार आया कि इस पर चित् छाया नाम की कपड़े की पट्टी सभी अपने हाथ से सिलें। कुछेक रंग-बिरंगी गट्टी लेकर आए, कुछ सुईयां। चित् छाया की पट्टी एक बड़ी चादर में से काटी और अपने मन का रंग चुन सभी ने सिलने के त्यौहार की शुरुआत सुई पिरोने से की। कोई किसी की सुई पिरोने में मदद कर रहा था, कोई पट्टी काटने में, कोई यह सोचने में व्यस्त था कि ये पट्टी, झोले में लगायी कहां जाए? सभी शिशिर की धूप में छत पर एक वृक्ष के सिरहाने बैठे थे। एकाग्रता वहां आयी और सबकी आंख और हाथ जमने लगा। बीच-बीच में कोई कहता कि खुद के हाथ से सिलना चाहिए, किसी प्रतिभागी को लगा कि

अभी धैर्य और सीखना होगा। इस गतिविधि का मकसद यही था कि कैसे धैर्य और एकाग्रचित्त होकर हम धीमे-धीमे काम को बुनें।

चौथा दिन – 'कदमों की सुनो'

इस सत्र की शुरुआत हिमांशु जी द्वारा खींची गई १२ तस्वीरों को देखने से हुई। पहली तस्वीर छात्र नेताओं की थी जो कि २००३ में खींची गई थी व जिस तस्वीर को लेने की प्रक्रिया में वे खुद भी घायल हुए। इस तस्वीर के साथ उन्होंने बताया कि कितना जरूरी है चौकस रहना फोटोग्राफर का।

फोटोग्राफर 'वास्तविकता' से सृजन कर रहा होता है ऐसे में बहुत जरूरी है कि वह बदलती परिस्थितियों का भान कर पाए, लोगों को पढ़ पाए।

कौथून में ली गयी तस्वीर में कुछ राजस्थानी महिलाएं हाथ में घड़ी बांधे, घूंघट से झांकती आंख से देख रही हैं। इस तस्वीर पर बात करते हुए हिमांशु जी ने कहा कि **फोटोग्राफर की रुचि घटना में नहीं, तस्वीर में होती है कि मेरी तस्वीर कहां है?**

एक फोटो को दिखाते समय उन्होंने कहा कि जो आपके सामने दिख रहा है केवल उस पर विश्वास मत करो। आपके पैर स्वत: आपको किधर मोड़ रहे हैं, उस ओर भी चेतना ले जाओ।

हर तस्वीर की एक यात्रा है, एक कहानी है। जिस क्षण को तस्वीर के रूप में रोका गया है, उस क्षण को देखना सीखना होगा।

द्वितीय सत्र – अच्छी फोटो क्या है?

ब्रेस्सां से जब यह पूछा गया तब उन्होंने कहा कि कोई भी तस्वीर जो देखने वाले का ध्यान दो सैकण्ड तक रोक कर रखती है वह एक अच्छी तस्वीर है।

तकनीकी रूप से समझाते हुए बताया गया कि अच्छी तस्वीर में विषय स्पष्ट हो व विषय फोकस में हो, विषय को इस तरह से रखा जाए कि वह रचनात्मक लगे। (रूल ऑफ थर्ड) इसी के साथ हमें अपरचर, शटर स्पीड समझाते हुए एक्सपोजर त्रिभुज के बारे में भी बताया गया।

जब पहले फिल्म कैमरे से फोटो लेते थे तब एक्सपोजर सारणी बनाते थे। नेगेटिव नंबर लिख कर, विषय लिख कर उसकी तकनीकी जानकारी के नोट्स बनाते थे जिससे कि फोटो को अच्छे से पढ़ सकें। हमें सिर्फ दो फोटो खींचने को कह कर एक्सपोजर सारणी बनाने का काम दिया गया।

पांचवा दिन – 'निर्णय लो'

एक्सपोजर त्रिभुज का रचनात्मक कार्य- अपरचर, शटर स्पीड व आईएसओ तीनों ही प्रकाश को नियंत्रित करते हैं। इन तीनों के कार्य को समझ लेने से हम अपने अनुसार तस्वीर ले सकते हैं। प्रतिभागियों ने इससे जुड़े काफी सारे सवाल पूछे।

तस्वीर रसास्वादन –

इस सत्र में हमें ब्रेस्सां, टी.एस. सत्यन एवं एंसल एडम्स की तस्वीरें दिखाई गई। एंसल एडम्स की तस्वीरों में शांत प्राकृतिक परिदृश्य थे, जो अपने आप इधर-उधर देखती आंख को स्थिरता दे रहे थे, टी.एस. सत्यन की तस्वीरों में हमने देखा कि जो भी वह दिखाना चाहते थे उनका विषय एकदम उभर कर झलक रहा था, फिर वह तैराक लड़कों की छलांग हो या फिर १९६० में ली गई मजदूरों की खंभा उठाए तनी हुई भुजाओं की तस्वीर। ब्रेस्सां की तस्वीरों में हमने देखा कि कैसे एक फोटोग्राफर इतना चौकन्ना रहता होगा कि उसने एक जीवंत पल को रोक दिया अपनी तस्वीर में हमेशा-हमेशा के लिए। कैसे उनकी आंख कुछ देखती होगी, मस्तिष्क निर्णय लेता होगा, मन पैरों को उस ओर मोड़ देता होगा और हाथ उठते होंगे और वह क्षण रोकने के लिए उनका सारा शरीर, आंख व मन एक जगह इकट्ठा होता होगा। इन सभी तस्वीरों की मदद से हमने फोटोग्राफी के तकनीकी व रचनात्मक पक्ष को तो समझा ही, साथ ही यह भी जाना कि फोटोग्राफर सोचता है फिर निर्णय लेता है। खुद के भीतर की आवाज को

सुनता है फिर कैमरे से तस्वीर लेता है।

आउटडोर–सत्र में हमें चार तस्वीरें लेनी थी। अपरचर बदल–बदल कर उसकी एक्सपोजर सारणी बनाकर उसका अध्ययन करने को हमें कहा गया। हिमांशु जी ने बताया कि पहले बस फोटो खींचते मत चले जाओ, उसका खूब अध्ययन करो।

छठा दिन –

1. 'दृश्यों की ध्वनि'

हिमांशु जी ने हम सभी को उनका लिखा हुआ एक आर्टिकल पढ़ने को दिया। जिसमें एक बच्ची की शर्माती हुई सी हंसी की तस्वीर थी। यह आर्टिकल इस तस्वीर को लिए जाने वाले क्षणों के दौरान फोटोग्राफर के भीतर क्या मनोभाव उभर रहे थे उसकी एक झलक देता है। गुस्मिना नाम की एक बच्ची जो कि करीब छह साल की है और कैंसर जैसी बीमारी के साथ जी रही है, वह अनभिज्ञ है इस बीमारी से, पर फोटोग्राफर सोच रहा है उसकी मुस्कान के बारे में, उसकी अनभिज्ञता के बारे में और इन सब विचारों के साथ यह तस्वीर निकलती है। हम सभी बहुत देर चुप रहे। इस आर्टिकल को पढ़ते हुए एक गहरी सुबह की शुरुआत हुई। फोटो ले लेना सिर्फ एक क्लिक करना नहीं बल्कि इतने सारे भावों के प्रवाह में रुक कर कुछ देख पाना है।

2. शटर को जानना –

शटर स्पीड के बारे में कुछ उदाहरण के साथ विस्तृत चर्चा हुई।

3. फोटोवॉक–

जनवरी के शुरुआती दिनों में सर्दी की बारिश का समय रहा। इस दिन बारिश के आने की आशंका बनी हुई थी और हमारी फोटोवॉक होनी थी। हमें समिति परिसर में ही दस फोटो लेने को कहा गया। परिसर के आर्किटेक्चर, यहां पर रहते आकाश, पेड़, फूल सभी से हर रोज हम मिल ही रहे थे और आज हम लौट–लौट के उन सब कोनों में गए जहां से गुजरते हुए हम वहां रुकना चाहते थे। किसी ने पत्थर की शिला की बैंच की फोटो ली, किसी ने बारिश के पानी में तैर रहे पत्तों की। सभी कैमरा थामे बीते पांच दिनों को साथ लिए अपनी तस्वीर को देखने के लिए उत्सुक थे कि हमारे पैर हमें कहां लेकर जाते हैं? मेरी आंखें क्या देखती हैं, मैं क्या निर्णय लेता हूं ?

4. तस्वीर आलेख –

हम सभी जब बाहर फोटो खींचने गए तब अंदर हॉल में कुछ तस्वीरें लगा दी गई थीं। जब हम आए तो हमें उन तस्वीरों में से कोई एक तस्वीर चुन कर उस पर लिखने को कहा गया। हर कोई तस्वीरों के आगे से गुजरता रहा और फिर तस्वीर ने चुन लिया शब्दों को, शब्द जो कह रहे थे तस्वीर के रंगों को, भावों को।

5. छवि रसास्वादन–

हम सभी ने जो तस्वीरें खींची उनमें से कुछ को प्रोजेक्टर पर दिखाया गया और उसमें विषय, प्रकाश, अपरचर, शटर स्पीड के बारे में चर्चा की गई।

सातवां दिन –

चित् छाया उत्सव का यह आखिरी दिन था और सब उत्सुक थे प्रिंट हुई तस्वीरों को देखने के लिए। समिति के स्टूडियो में तैयारियां चल रही थी फोटो को माउंट करने के सत्र की ।

काले रंग के चार्ट पेपर की कटिंग कर, अशुंल ने सत्र की शुरुआत की। सभी ने एक–दूसरे की तस्वीर को खुद के बनाये हुए फ्रेम में लगाया और फिर सभी को कहा गया कि वह समिति परिसर में स्थान चुन कर अपनी तस्वीरों को वहां अपने अनुसार लगाए। अंतत: सभी ने अपनी तस्वीरों को उन्हीं स्थानों को लौटा दिया जहां से वे आई थीं। किसी ने अपनी तस्वीर को मिट्टी पर रख उसके चारों तरफ पत्तों से बॉर्डर बनायी, किसी ने अपनी तस्वीर को जामुन के वृक्ष की डाल पर टांगा, किसी ने अपनी तस्वीर के लिए पत्थरों को जमा कर एक स्थान बनाया तो किसी ने अपनी तस्वीर को वहां ही लगाया जहां से वह तस्वीर दिखी थी।

कुछ ही देर में समिति की क्यारियां, पेड़, पत्तियां, पगडण्डियां मौन तस्वीरों से सज गए थे। जहां वे सृजित हुई वहीं उन्हें विसर्जित कर दिया गया। न चमचमाती गैलेरी न सैकड़ों दर्शक। न उन तस्वीरों को समझाने व दिखाने का प्रयास। प्रदर्शन नहीं–केवल दर्शन। इसे दर्शनी कहा गया।

बादल घिर आए थे। फ्रेम हवाओं में उड़ रहे थे। पर तस्वीरों को प्रकृति के तत्वों की गोद में छोड़ सब आ गए। रात में तेज बारिश आयी। धूल, पत्तों, टूटती टहनियों और भीगी तस्वीरों में कोई फर्क नहीं रहा। ❑

भावांजलि

❑

ओम थानवी, जयपुर

जाने-माने शिक्षाविद्, गांधी-विचार के संवाहक, राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति के अध्यक्ष और 'अनौपचारिका' के संस्थापक-संपादक रमेश थानवी नहीं रहे। मेरे चाचा थे। पिताजी के अकेले भाई। साया उठ गया। उनके तीन बेटियां हैं; स्वाति, ज्योति और गुनगुन। चाची कुछ वर्ष पहले चली गई थीं। यों हमारा एक ही परिवार है।
दो-तीन दिन से उनकी तबीयत नासाज़ थी। वरना रोज़ समिति जाते, शाम को लौटते। परसों प्रेमलताजी और ऋचा जांच करवाकर आए। सब रिपोर्ट सही थीं। हमारे कहने पर ऑफ़िस नहीं गए। कल रात मैं घर लौटा तब वे उनसे मिलने आए हिमांशु व्यास और दो रंगकर्मियों से बातचीत में मशगूल थे। फिर दिल्ली वर्षा दास से बात की। फिर मुझसे चुनाव चर्चा। फिर रोज़ की तरह अपने पड़पोतों (ऋचा-मिहिर के बेटों) से आधी रात की गपशप। ऋजु ने कहा कि नए घर में बड़े-दादू हमारे साथ ही रहेंगे न? घर लिया तब से तय था। ऋजु ने फिर पूछा।
देर रात सोते समय मैं सोच रहा था कि काका जी (बचपन से हम भाई-बहन ऐसे ही पुकारते आए) का कमरा नीचे की मंज़िल पर ठीक होगा, ऊपर तो उन्हें कुछ समय बाद मुश्किल रहेगी।
मगर सुबह वे नहीं उठे। साईं के घर चले गए।

उन्होंने दर्शन की पढ़ाई की। साहित्य का स्वाध्याय किया। हिंदी और अंगरेज़ी दोनों पर अधिकार था। बांग्ला भी जानते थे। मैंने हमेशा चाहा कि मेरी हिंदी उन जैसी सहज हो। समाज और शिक्षा पर उन्होंने बहुत लिखा। 'सवाल करने का हक' और 'शिक्षा की परीक्षा' उनकी जानी-मानी किताबें हैं। बच्चों के लिए लिखी घड़ियों की हड़ताल बहुत छपी, बहुत पढ़ी गई। रेगिस्तान की पृष्ठभूमि पर सत्यजित रे की कृति 'सोनार केल्ला' (सोने का क़िला) का अनुवाद भी उन्होंने किया था। और भी अनेक। उन्होंने मुझे ख़ूब पढ़ने की प्रेरणा दी। लड़कपन में दार्जिलिंग चाय उन्होंने ही बताई। सरोकारी पत्रकारिता वे ख़ुद कर आए थे। प्रतिपक्ष में कमलेश, गिरधर राठी, मंगलेश डबराल, एन. के. सिंह के साथ। वह संघर्ष वाले जॉर्ज फ़र्नांडीज़ का साप्ताहिक था। जॉर्ज के एनडीए से जुड़ने को वे कभी माफ़ नहीं कर सके। देश में बढ़ते आततायी माहौल से अक्सर दुखी, बहुत भावुक हो उठते थे।❑

प्रकाश न.शाह, अहमदाबाद (गुजरात)

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति के अध्यक्ष और राजस्थान की सर्जनात्मक शैक्षणिक प्रवृत्तियों में सहभागी एवं अभिभावक रमेश थानवी जी के निधन से हुई अपूरणीय क्षति में गुजराती साहित्य परिषद शोक संवेदना में सहभागी है। जब नारायण भाई देसाई हमारे अध्यक्ष थे तब दिसम्बर, २००८ में हमारे कीम ज्ञान सत्र में विशेष अतिथि के रूप में रमेशजी ने सराहनीय शिरकत की थी। अनौपचारिका ने जो विशेष स्थान हिन्दी भाषी इलाकों में और गुजरात में भी बनाया है। इसकी तो बात ही कुछ और है। ❑

रणजीतसिंह कूमट, पूर्व अध्यक्ष राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति

समिति के अध्यक्ष एवं शिक्षाविद् श्री रमेश थानवी के सहसा देहावसान से सभी को गहरा धक्का लगा है। श्री थानवी समिति से प्रारंभ से ही जुड़े थे और विभिन्न पदों पर रह कर समिति के विकास में योगदान दिया। मेरे साथ भी निदेशक के रूप में काम किया। उनके अचानक जाने से समिति को ही नहीं शिक्षा जगत को क्षति पहुंची है। ❑

श्री अरविन्द गुप्ता, पुणे

रमेश भाई मेरे बड़े भाई जैसे थे, जनवरी के शुरू में मैंने उन्हें गिजुभाई बधेका की नई स्थापित वेबसाइट का लिंक भेजा, जब उनका फोन नहीं आया तो मुझे कुछ गड़बड़ लगी। उन्होंने अपनी सभी किताबें मुझे भेजीं थीं। जिन्हें आरकाइव डॉट काम पर डाला। पिछले सालों की अनौपचारिका पत्रिका की डिजिटल कॉपी भी हम सब को मिलकर इस साइट पर डालनी है। यही रमेश भाई के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।❑

आशा बोथरा, मीरा संस्थान, जोधपुर

पूज्य भाईसाहब के निधन के दुखद समाचार से व्यथित हूं। श्रद्धेय भाई को सुतांजलि नमन। ❑

गुलाब बत्रा, जयपुर

सुरसंगत के वाट्स समूह पर १२ फरवरी की सुबह स्क्रीन पर थानवी जी की स्मृति में नमन का वाक्य देख एक बारगी विश्वास ही नहीं हुआ। कुछ अर्से पहले ही तो मानसरोवर के स्वर्णपथ मोक्षभूमि पर थानवी जी का सानिध्य मिला था। क्या यह विधि का विधान था कि इसी स्थल पर अब हम उन्हें पंचतत्व में विलीन होने के साक्षी बनेंगे – इतनी जल्दी। सरल, सहज, उदारमना थानवी जी इसी भाव से विदा हो गए। समाज जीवन में साझेदारी से रचनात्मक कामकाज के प्रोत्साहन के लिए उन्होंने चुन चुन कर फूलों की जो माला बनाई, उसकी सुगंध बनी रहे-उनकी स्मृति के लिए हमें यही करना है। ❑

सीमान्त समिति, बज्जू
जाने-माने शिक्षाविद्, गांधीवादी लेखक, विचारक, प्रखर वक्ता, समझ के धनी, अध्येता रमेश थानवी का आकस्मिक निधन हो गया। इस अपूर्ण घटना से पूरा उरमूल परिवार बहुत ही आहत हुआ है। ❑

श्री विलास जाह्नवे, उदयपुर
रमेश भाई के असामयिक निधन से मैं यतीम हो गया। उनके सान्निध्य में समिति का परिसर किसी गुरुकुल से कम नहीं था और उनका घर तो मेरे लिए मायके से कम नहीं था।

भाई साहब की बाल कविता की पुस्तक 'देखो बेटी बादल आये' को मैंने स्कूलों के अलावा मेडिकल और इंजीनियरिंग के विद्यार्थियों को पढ़ाया, गवाया और नचाया।

सादगी से भरे एक विद्वान संत की तरह उन्होंने हर एक के जीवन में सच्ची शिक्षा और प्रेम के बीज बोये और स्वयं ब्रह्मलीन हो गए। ❑

डॉ. रेणुका राठौड़, जयपुर
शिक्षा मनीषी, प्रखर गांधीवादी विचारक, चिन्तक एवं संपादक रमेश थानवी जी के आकस्मिक निधन से हमें बेहद दुःख पहुंचा है। आप स्नेह, सहयोग एवं अपनत्व की एक मिसाल थे। आपके नेतृत्व में समिति ने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान हासिल की। जीवन भर गांधी और विनोबा को न केवल अपने विचारों में रखा बल्कि उन्हें भरपूर जिया भी।
शत शत नमन।❑

ओमा शर्मा, अहमदाबाद
रमेश थानवी जी का जाना हम सब की बड़ी सामूहिक क्षति है। समाज के उत्थान के लिए शिक्षा के जरिए बदलाव लाने में उनका अटूट विश्वास था। वे गजब के संवादी थे। हरदम सहज।❑

ओमप्रकाश झंवर, भीलवाड़ा
दिल मान नहीं रहा है कि महान विचारक एवं मननशील व्यक्तित्व रमेश जी थानवी ब्रह्मलीन हो गये। हम इतना जरूर जानते हैं कि उनका सृजनशील एवं मननशील व्यक्तित्व इतना उच्च कोटि का रहा है कि वे हमारे मन-मस्तिष्क में सदैव जिंदा रहेंगे। गांधीजी के सिद्धांत एवं प्रेरणा को देश-दुनिया में अनौपचारिका पत्रिका एवं अनेक साहित्य के माध्यम से जन जन तक पहुंचाने वाले महान मनीषी थानवी साहब को विनम्र भावभीनी हार्दिक श्रद्धांजलि। ❑

हूबनाथ, मुम्बई
यह तो बहुत भयावह खबर है। हमें अनाथ कर गए। ईश्वर उनकी आत्मा को चिरशांति प्रदान करे। ❑

बहुत सारे व्यक्तियों एवं संस्थाओं से हमें व्हाट्सअप के माध्यम से संदेश मिले हैं-राजस्थान नॉलेज कॉर्पोरेशन, पीरामल फाउंडेशन, प्रिंस सलीम, ओमप्रकाश टाक, अविनाश भार्गव, सुनीता तंवर, वर्षादास, ओम कुबेरा, उषा बापना, सुशील दशोरा, ध्रुव यादव, मंजू रानी सिंह, अन्नपूर्णा शुक्ला, भगवान अटलानी, सत्यप्रकाश महेश्वरी (सत्तू चाचा), सुज्ञान मोदी, अभय कोठारी,डॉ. विजी चौधरी, कामिनी सेन, अनुपमा तिवारी, गरिमा श्री कपूर आदि।❑

चित् छाया फोटोग्राफी कार्यशाला के विद्यार्थी

(१-७ जनवरी, २०२२)

अभिषेक जोशी | अपर्णा देवल | अपर्णा मक्कड़ | बटीना मलिक | बोधायन शर्मा
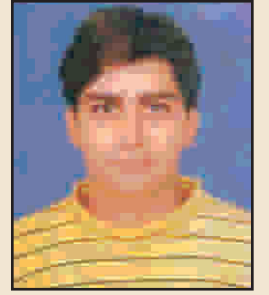
विनिता सोनी | कबीर सिसोदिया | कुन्तल भारद्वाज | मूमल तँवर | प्रमोद पाठक
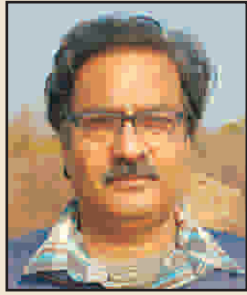
प्रेम गुप्ता | रवि कांत | रूपांक्षा चारण | त्वरिता सिंह चौहान | उर्वशी देव रावल

विपिन जांगीड़ | कमल शर्मा | यामिनी सेन | नीलम अग्रवाल | अंशुल बंधिवाल

स्वत्त्वाधिकारी राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति द्वारा कुमार एंड कम्पनी, जयपुर में मुद्रित तथा
7-ए, झालाना संस्थान क्षेत्र, जयपुर-302004 से प्रकाशित। का.संपादक - श्रीमती प्रेम गुप्ता

RNI 43602/77 ISSN No.2581-981X

अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री, राजस्थान

जनसेवा के तीन वर्ष

सपनों की 'उड़ान' के लिए नारी के स्वाभिमान के लिए

नि:शुल्क सेनेटरी नैपकिन वितरण योजना

माहवारी कोई बीमारी नहीं है, न ही ये कोई शर्म और संकोच का विषय है। समाज को अब सोच बदलनी पड़ेगी, हमें महिलाओं के स्वास्थ्य की रक्षा करनी होगी। महिलाओं की गरिमा, सम्मान और निजता की दिशा में एक जरूरी कदम है **"उड़ान"**

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान

क्यों ज़रूरी है सेनेटरी नैपकिन

- देश में लगभग 2 करोड़ 30 लाख लड़कियों को माहवारी के कारण स्कूल छोड़ना पड़ता है।
- एक अध्ययन के अनुसार देश में लगभग 62% महिलाएं पीरियड्स के समय सेनेटरी नैपकिन की जगह कपड़े का प्रयोग करती हैं। पीरियड्स के दौरान इस्तेमाल की गई अनहाइजिनिक (अस्वच्छ) वस्तुओं से कैंसर जैसी गंभीर बीमारी भी हो सकती है।
- जानकारी के अभाव में लड़कियों को माहवारी संभालने में मुश्किलें आती हैं और उनके लिए शारीरिक व मानसिक बीमारियाँ खड़ी होती हैं, पढ़ाई ठीक से नहीं होती, आत्मविश्वास डगमगाता है और खुद की नज़रों में कमतर महसूस करने लगती हैं।
- सब महिलाओं को माहवारी के समय पैड का उपयोग करना जरूरी है, माहवारी प्रकृति का उपहार है, यह कोई शर्म की बात नहीं है।
- सेनेटरी नैपकिन या पैड की जगह अन्य कपड़े अथवा चीजों के इस्तेमाल से बांझपन (इनफर्टिलिटी) तक हो सकता है।

अधिक जानकारी के लिए जनकल्याण पोर्टल www.jankalyan.rajasthan.gov.in देखें
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान